UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Special Issue

Issue I, Vol I 10th February 2018

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

Scanned with CamScanner

33	वैश्विकरण का दुर्बल घटकोंपर हुआ परिणाम	प्रा.राजाराम बाबासाहेब जाधव , प्राचार्या डॉ.रजनी शिखरे	94
34	शिवाजी के उपन्यास में व्यक्त नारी जीवन	श्री.शिंगटे अशोक भानुदास	97
35	वैश्वीकरण और मीडिया	डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर	99

Marathi

1	जागतिकिकरण आणि मराठी भाषेवरील परिणाम	डॉ.सदाशिव सरकटे	102
2	जागतिकीकरण आणि महानगरीय मराठी कविता	डॉ. सविता माधव	104
3	जागतिकीकरणाचा मराठी भाषेवर पडलेला प्रभाव	प्रा.डॉ.गोविंद रामदिनेवार	108
4	जागतिकीकरण आणि मराठी भाषा व अनुवादीत साहित्य	डॉ. गजानन पांडुरंग जाधव	112
5	जागतिकीकरण आणि मराठी कविता	प्रा. डॉ. रामचंद्र झाडे	115
6	जागतिकीकरणात मराठी कविता मधील 'जागतिकीकरणात माझी कविता'	डॉ.एस.ए.कव्हळे	118
7	जागतिकीकरण : अनुवाद आणि मराठी साहित्य संस्कृती	डॉ. पुरुषोत्तम शेषेराव जुम्ने	122
8	मराठी कविता व जागतिकीकरण	प्रा.अनंत उध्दवराव मोगल	123
9	जागतिकीकरण आणि मराठी भाषा	स.प्रा.डास रवींद्र बाबासाहेब	127
10	जागतिकीकरणाचे मराठी साहित्यातील प्रतिबिंब	प्रा.गजानन आनंता देवकर	130
11	जागतिकीकरण आणि ग्रामीण कादंबरी	प्रा.डॉ.संतोष देशमुख	133
12	जागतिकीकरणात मराठीभाषा संदर्भातील मत	प्रा.डॉ.दादासाहेब गिन्हे	136

Scanned with CamScanner

ISSN : 2319 – 8648 **CURRENT GLOBAL REVIEWER**
Impact Factor : 2.143 SPECIAL ISSUE Issue I, Vol I, 10th Feb. 2018

वैश्विकरण का दुर्बल घटकोंपर हुआ परिणाम

प्रा.राजाराम बाबासाहेब जाधव
आर.बी.अट्टल महाविद्यालय, गेवराई जि.बीड
प्राचार्या डॉ.रजनी शिखरे
श्री सिध्देश्वर कनिष्ठ महाविद्यालय, गेवराई, जि.बीड

---------------(33)---------------

प्रस्तावना :- आज दुनिया में वैश्वीकरण बड़ी तेजी से फैल गया है । इस युग में देशों-देशों के बीच की सीमा गायब हो रही है । पुरा संसार एक गाँव सा प्रतीत हो रहा है । अंग्रेजी में Globlisation शब्द हिंदी में भुमंडलीकरण, वैश्वीकरण, ग्लोबीकरण जगतीकरण आदि नामों से जाना जाता है ।

संसार में होनेवाले बदलाव की ओर वैश्वीकरण की दृष्टी से देखा जाता है । इस संदर्भ में डी.बायुपोल लिखते है कि, पुराने जमाने में भूमी संबंधी सीमा प्रधान थी । अमेरीका जाने के लिए भारत छोड़ा जाता था । लेकिन आज भूमि संबंधी सीमा कम होती जा रही है । आर्थिक सीमा की शक्ति बढ़ती है । अमीर गरीबों को भूल जाते है । गरीब अमीरों को घृणा की दृष्टि से देखते है ।[1]

<u>वसुदेव कुटूंबकम</u> इस संस्कृत उक्ति की प्रेरणा से संबंध विश्व ही मेरा घर है यही संकल्पना लेकर वैश्वीकरण की संकल्पना विकसित हो रही है । वैश्वीकरण के पीछे संसार भर को एक बनाने की कामना है ।[2] भारत में यह संकल्पना बहुत पुरानी है । वैदिक काल में ही इसे देखा जा सकता है । वसुदेव कुटूंबकम् संबंध पृथ्वी ही एक कुटूंब इतना यह व्यापक विचार था ।

वैश्वीकरण का अर्थ :- वैश्वीकरण मतलब विभिन्न देशों के लोगों, वहाँ की कंपनियों और सरकारों के बीच अंतक्रिया और एकीकरण की एक ऐसी प्रक्रिया है जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश द्वारा संचालित की जा रही है । Information Technology इसमें काफी सहायता प्रदान कर रही है । वैश्वीकरण के कारण पर्यावरन, संस्कृति, राजनैतिक व्यवस्थाओं, आर्थिक विकास और दुनिया भर के समाजों में रह रहे मानवों के भौतिक जीवन पर खासा प्रभाव पड़ रहा है । वैश्वीकरण को पारिभाषित करते हुए एम.अल्बो और ई किंग कहते है की, <u>जिस प्रक्रिया के द्वारा विश्व के लोग एकही समाज में सम्मिलित होते है उस प्रक्रिया को वैश्वीकरण कहा जाता है ।</u>[3]

रौनाल्ड रॉबर्टसन के मत से - Globalization as the copresssion of the world and rapid increased of consciousness of the world as a whole मतलब इस संसार को छोटा करना और पुरा संसार एक ही है इस भावना का जल्द प्रसार करना मतलब वैश्वीकरण ।[4]

भारत में सन 1991 से वैश्वीकरण की शुरूआत हुई । तत्कालीन अर्थमंत्री, माजी प्रधानमंत्री डॉ.मनमोहनसिंग के निर्णय के अनुसार उदारीकरण, शिथिलीकरण और खाजगीकरण का धोरण मान्य किया है । इस निर्णय का अपने देश के दुर्बल घटकों पर बड़ा विपरीत परिणाम हुआ है । देश की संपत्ती मुठ्ठीभर लोगों के हाथ में संग्रहित हुई है । इस संदर्भ में दि.23.09.2018 लोकमत वर्तमानपत्र में चंद्रकांत भिलुरे ने अपने लेख कुठ गाललाय सबका साथ सबका विकास में लिखा है कि, पिछले साल निर्माण हुए संपत्ती में से 73 प्रतिशत संपत्ति 1 प्रतिशत लोगों के जेब में गई ऐसा अहवाल ऑक्सफॅम इस अंतरराष्ट्रीय संस्था ने प्रसिध्द किया है ।

गरीबी हटाने का, वंचित, शोषित लोगों का विकास करने का दावा आज के प्रधानमंत्री कर रहे है, पर ऑक्सफॅम के अहवाल के अनुसार 2017 में देश के 67 करोड़ लोगों के उत्पादन में केवल 1 प्रतिशत बढ़ोतरी हुई, तो 1 प्रतिशत लोगों के उत्पादन में 20.9 लाख करोड़ की बढ़ोतरी हुई है । केंद्रशासन के 2017-18 के अर्थसंकल्प के आस-पास जानेवाला यै आंकडा है ।[5] इससे यह बात तो स्पष्ट हो रही है की भारत अमीर बन रहा है पर भारत की जनता गरीब बनती नजर आ रही है । इस संदर्भ में अभयकुमार दुबे का कहना संयुक्तिक लगता है उन्होंने लिखा है कि, 15 अगस्त एक आधुनिक <u>राष्ट्र के</u>

Scanned with CamScanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER
ISSN : 2319 – 8648 Impact Factor : 2.143 SPECIAL ISSUE Issue 1, Vol 1, 10th Feb. 2018

साकार होने की शुरुआत थी । इस सिलसिले की केंद्र में थी लोकतांत्रीक राजनिती । लेकिन, उस साकार राष्ट्र को निराकार करने की तरफ पहला कदम 24 जुलाई 1991 को उठाया गया था ।[6]

वैश्वीकरण का बुरा परिणाम हमारे देश के पीड़ित, वंचित, किसान, एंव दलित लोगों पर साथ ही साथ महिलाओं पर भी हुआ हैं । हमारी अर्थव्यवस्था सही मायने में खेती के ईर्दगीर्द घुमती हैं पर आज किसानों की अवस्था देखी नहीं जाती । उत्तम खेती ऐसा जिसे पहले कहा जाता था वही किसान आज खेती बेचना चाहता हैं । खुदखुशी करने की नौबत किसानों पर आ गयी हैं । महाराष्ट्र में मराठवाड, विदर्भ के किसानों उसमें भी बीड जिले में कई किसानों ने खुदखुशी की हैं । इसके कई कारण है इसमें से वैश्वीकरण एक है । राज्यसंस्था ने इस प्रश्न की ओर गंभीरता से सोचना चाहिए ।

वैश्वीकरण का दूसरा बूरा परिणाम यहाँ के कारीगरों पर हुआ । वैश्वीकरण के आक्रमण से यहाँ के छोट-छोटे उद्योग और व्यवसाय समाप्त हुए । इस कारण व्यवसायीक बेरोजगार हुए । उनकी रोजी-रोटी का साधन छीना गया । उदा. यहाँ करघे पर कपड़ा बुननेवाला कारीगर वैश्वीकरण के कारण कपड़े की बड़ी मील शुरु होने के बाद कैसे टिक पायेगा? उसे अपना काम छोड़कर मजदुरी करनी पड़ी वह भी भरोसे की नहीं हैं । कब कंपनी से या मील से निकाल दिया जायेगा कहा नही जा सकता । इसलीए बहुत बुरी समस्या बेरोजगारी की निर्माण हुई है ।

वैश्वकरण के कारण स्पर्धा भाव बढ़ गया हैं । इस कारण श्रमीकों का अवमुल्यन हो रहा हैं । इस संदर्भ में विष्णु प्रांजोल कहते है कि, वैश्वीकरण को श्रम से कोइ भावात्मक लगाव नही हैं । इस्तेमाल करो और कुड़े दान मे फेंको के नारे पर पुरी तरह अमल करते हुए कार्पोरेट जगत ने हायर एंव फायर (काम पर रखो, फिर नौकरी से निकाल बाहर करो) को अपना मुलमंत्र बना लिया है ।[7] स्पर्धाभाव के कारण मजदुरों को 10 घण्टें 12 घण्टे काम करना पड़ता हैं । और मजदूरी कम दी जाती हैं ।

वैश्वीकरण के कारण दलितों के व्यवसाय संस्कृती का वस्तुकरण हुआ हैं । दलितों के पारंपारिक व्यवसाय नष्ट हुए । साला, कोली, विणकर, चमार आदि जातियों के व्यवसाय समाप्त हुए । चमार लोगों के व्यवसाय को लगा सामाजिक कलंक भी इसके साथ मिट गया । व्यवसाय नष्ट हुए पर जाति का लगा कलंक मिटते हुए नही दिखाई देता । भारत में ही नही तो विश्व में कहीं भी गए तो दलितों की ओर देखने की दृष्टी घृणात्मक थी और आज भी कहीं-कहीं यह दिखाई देती हैं । दलित युवकों के हाथ के व्यवसाय छुटे पर वैश्विकरण ने दुसरे व्यवसाय उनके लिए निर्मित नहीं किए । इस संदर्भ में गोपालगुरू कहते है की, वैश्वीकरण का समर्थन करनेवाले ज्यादातर दलित नेता मानते है कि यह प्रक्रिया दलितों के लिए मुक्ति का रास्ता खोलनेवाली है पर वे इस बात का जवाब देने से कतराते हैं कि आज के दलित युवक इतने कुंठित और हताश क्यों है ? वे इन बातों का भी जवाब देते कि उन दलितों को वैश्वीकरण से कैसे लाभ पहुँचेगा जो मुख्यत: असंघटित क्षेत्र, जो तेजी से सिकुड़ता जा रहा है, से अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं ।[8]

वैश्वीकरण का सबसे बुरा परिणाम नारी जाति पर पड़ा हैं । वर्तमान रूप में नारी पुर्णत: एक बिकाऊ माल के रूप में परिवर्तित हो गयी हैं । नारी अपना गर्भाशय तक पैसे के लिए गिरवी रख रही हैं । यह वैश्वीकरण का ही परिणाम हैं । नारी घर से बाहर निकली, विकास के प्रत्येक दौर में हिस्सा ले रही है पर उसकी ओर देखने की दृष्टी में कोई बदलाव नही आया । आज भी वह हवस की शिकार होती हैं । उसे कभी भी पुरूष के समान स्थान नही दिया गया । उसका अस्तित्व पुरूष सापेक्ष हैं ।

अंत में सिर्फ इतना ही कह सकते हैं कि, दुनिया वैश्वीकरण के कारण भलेही चाँद पर मंगल पर जाये यदि उसमें मेरे भारत के गरीब, वंचित, दलित, किसान का कोई फायदा नही होता तो यह व्यवस्था कुछ काम की नही हैं । सरकारने सभी लोगों का शाश्वत विकास की संकल्पना को विकसित करने की आवश्यकता हैं ।

Scanned with CamScanner

संदर्भ :-

1) डी.बाबुपोल - अतिरूकलिल्लाता लोकम - मलयालम - पृ.7
2) सी.वेंकटेशलु - Human Resources Development in the context globalization पृ.67
3) एम.अल्बो और ई किंग - बारावी समाजशास्त्र शिक्षण मंडल किताब - पृ.149
4) रोनाल्ड रॉबर्टसन - बारावी समाजशास्त्र शिक्षण मंडल किताब - पृ.149
5) चंद्रकांत किलुरे - कुठे चाललाय सबका साथ सबका विकास - दि.22/01/ 2018 का दै.लोकमत वर्तमानपत्र का लेख
6) दुबे अभयकुमार - भारत भुमंडलीकरण - पृ.21
7) विष्णु प्रांजोल - भूमंडलीकरण के जुडवाँ संताने, बेरोजगारी और छटनी तथ्यभारती, दिसंबर 2005 - पृ.06
8) गोपालगुरु गील संचय - भूमंडलीकरण के दौर में जन जाति समाज - तथ्यभारती - अगस्त-सितंबर 2005 - पृ.37

Scanned with CamScanner